शोध सार

बहु-कक्षा बहु-स्तर : एक समीक्षा

सुशील जोशी

भारत में शिक्षा के गिरते स्तर की चुनौतियों के लिए अनेक तरह के प्रयोग किए गए हैं। इनमें से एक बहु कक्षा और बहुस्तरीय शिक्षण पद्धति है। अनेक राज्यों में इसका प्रयोग किया गया है। इस पद्धति के बारे में क्या सोच है और कितनी कारगर है? इसके बारे में शिक्षकों का क्या नजरिया है? शिक्षक प्रशिक्षण किस तरह के हो रहे हैं? किस तरह की सामग्री का इस्तेमाल किया जाता है; आदि-आदि ऐसे सवाल हैं जिनके प्रकाश में इसे समझने की जरूरत है। छत्तीसगढ़ राज्य में चले इस प्रयोग का अध्ययन टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ सोश्यल साइंसेज ने किया। इसी शोध का संक्षिप्त सार यहां प्रस्तुत है।

छत्तीसगढ़ में बहु कक्षा बहु स्तर (एमजीएमएल) कार्यक्रम 2008 में शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य प्राथमिक स्कूलों को ज्यादा बाल-स्नेही बनाने के अलावा यह भी था कि स्कूलों में व्याप्त बहुस्तरीय व बहुकक्षा हकीकत को मद्देनजर रखते हुए बच्चों के लिए सीखने के ज्यादा अवसर उपलब्ध कराए जा सकें। एमजीएमएल की संरचना में निम्नलिखित बातें प्रमुख रही हैं: ''बच्चों की विविधता, समाज से संबंध बच्चों की रुचियों व सीखने के तरीकों के अनुरूप रहे। बच्चों को गतिविधियों के माध्यम से सीखने का मौका मिले और वे अपने सीखने का नियमन खुद कर पाएं और साथी विद्यार्थियों से भी सीख पाएं। इसमें ऐसी विधियों का उपयोग हो जो बच्चे की गति व स्तर का ध्यान रखें।''

कार्यक्रम वर्तमान रूढ़िगत शिक्षण की खामियों को दूर करने के मकसद से विकसित किया गया है। कहा जा रहा है कि एमजीएमएल विधि शिक्षा प्रणाली की कई दिक्कतों का समाधान प्रस्तुत करती है और यह बच्चे को अपनी रफ्तार से और स्वायत्त ढंग से सीखने में मदद करती है। इसमें सामग्री बच्चे स्वयं संभालते हैं और शिक्षक महज एक मददगार की भूमिका निभाता/ती है। एमजीएमएल पद्धति की एक विशेषता यह भी बताई गई है कि इसमें अनियमित रूप से स्कूल आने वाले बच्चे और विशेष जरूरतों वाले बच्चे भी सीखने की प्रक्रिया में शामिल हो सकते हैं।

इस कार्यक्रम के लिए सामग्री राज्य शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद् ने शिक्षकों की भागीदारी से विकसित की थी। सामग्री में सीखने के काड्र्स, सीखने के लैडर्स, समूह चाट्र्स के अलावा तमाम शिक्षण सहायक सामग्री शामिल थी। 2012 में कार्यक्रम को राज्य के समस्त 26,750 स्कूलों में लागू कर दिया गया था। शिक्षकों को ब्लॉक स्तरीय प्रशिक्षणों के जरिए प्रशिक्षित किया गया था और कार्यक्रम के क्रियान्वयन में निरंतर समर्थन के लिए राज्य व ब्लॉक स्तरीय स्रोत समूह गठित किए गए थे। वैसे अंततः यह अपेक्षा थी कि ब्लॉक व क्लस्टर स्तरीय स्रोत समूह शिक्षकों के लिए समर्थन की भूमिका निभाएंगे। शुरुआत में कार्यक्रम कक्षा 1 से 4 तक के लिए था मगर 2012 में इसे मात्र कक्षा 1 व 2 तक सीमित कर दिया गया था।

एक रोचक तथ्य यह है कि उपरोक्त प्रक्रिया के साथ-साथ 2009 तक राज्य शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद् ने राज्य पाठ्यक्रम ढांचा तैयार करके उसके अनुसार सारी कक्षाओं के लिए पाठ्यपुस्तकें भी तैयार कर ली थीं। ये पाठ्यपुस्तकें प्रदेश के प्राथमिक स्कूलों में दाखिल सारे बच्चों को दी जाती हैं। इस पाठ्यक्रम ढांचे के अनुरूप एक नया डी.एड. कार्यक्रम और उस कार्यक्रम के लिए सामग्री भी तैयार कर ली गई है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद् ने एमजीएमएल के

लेखक परिचय

होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम से जुड़े रहे हैं। होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम का पुस्तक के रूप में दस्तावेजीकरण किया है। वर्तमान में एकलव्य, भोपाल के साथ संबद्ध हैं और शिक्षा में स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहे हैं।

मूल्यांकन का काम टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइन्सेज (टीआईएसएस) को सौंपा था। यह अध्ययन अगस्त 2012 से जून 2013 के बीच किया गया। मूल्यांकन में 9 जिलों के 13 ब्लॉक्स के 120 स्कूलों को शामिल किया गया था। इस मूल्यांकन में गणित, हिंदी व पर्यावरण अध्ययन की सामग्री व तरीके की समीक्षा की गई। साथ ही वास्तविक परिस्थिति में इन सामग्रियों के उपयोग पर भी ध्यान दिया गया तथा बच्चों के अधिगम को भी देखा गया।

टीआईएसएस की समीक्षा रिपोर्ट को पढ़कर एक बात स्पष्ट नजर आती है - कार्यक्रम की डिजाइन तथा क्रियान्वयन का काम काफी अनमने ढंग से किया गया है। यह बात इसकी सामग्री, शिक्षक प्रशिक्षण तथा व्यवस्थाओं में झलकती है। यहां टीआईएसएस की रिपोर्ट का एक सार प्रस्तुत है।

पद्धति

कक्षा 1 से 4 के पूरे पाठ्यक्रम को कक्षावार अधिगम इकाइयों में बांटा गया है। इन इकाइयों को एक सोपानबद्ध व्यवस्था (लैडर) पर माइलस्टोन के रूप में क्रमबद्ध किया गया है। हरेक माइलस्टोन मोटे तौर पर एक अवधारणा या पाठ्यपुस्तक के एक पाठ के तुल्य है। प्रत्येक माइलस्टोन में 10 से 15 तक काड्र्स हो सकते हैं। माइलस्टोन बच्चे की प्रगति के आकलन के आधार हैं।

प्रत्येक कार्ड एक कार्य को परिभाषित करता है जिसे बच्चे करते हैं। यह कार्य पढ़ना, लिखना, सवाल छुड़ाना, गतिविधि करना या कोई खेल खेलना हो सकता है। कार्ड के अलावा बच्चों के लिए कुछ शिक्षण साधन भी उपलब्ध कराए गए हैं। इनके अलावा कक्षा 1 के बच्चों के लिए हिंदी रीडर्स भी दिए गए हैं।

हरेक कार्ड पर एक संकेत (लोगो) बना होता है, जिससे पता चलता है कि वह कार्ड लेने वाले बच्चे किस समूह में बैठेंगे और क्या करेंगे। कक्षा में कुल 6 समूह बनाए जाते हैं। संकेत से यह भी पता चल जाता है कि वह कार्ड किस विषय का है, उसमें किस तरह का कार्य किया जाना है और शिक्षक उस समूह की कितनी मदद करेंगे।

एमजीएमएल के तहत कक्षाओं को भी खास तरह से सजाया जाता है। दीवारों के निचले तीन फीट पर काला रंग पोतकर बच्चों के लिए ब्लैकबोर्ड बनाया जाता है और प्रत्येक बच्चे के लिए बोर्ड पर स्थान चिंह्नित होता है। सर्वेक्षण के दौरान देखा गया कि अधिकांश स्कूलों में यह ब्लैकबोर्ड मौजूद था और अच्छी हालत में था। इसके ऊपर एक पीली पट्टी में हिंदी वर्णमाला लिखी होती है। लैडर बड़े-बड़े चाट्र्स के रूप में है जिसे कक्षा में टांग दिया जाता है ताकि बच्चों को आसानी से नजर आए। कक्षा में टाट-पट्टी की बजाय प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आसन होते हैं ताकि उन्हें कतारबद्ध न बैठना पड़े। शिक्षकों से भी उम्मीद की जाती है कि वे कुर्सी पर न बैठकर बच्चों के साथ जमीन पर ही बैठें।

ऐसी उम्मीद की जाती है कि बच्चे लैडर में दर्शाए गए क्रम के अनुसार कार्ड-दर-कार्ड आगे बढ़ेंगे। प्रत्येक अधिगम इकाई के लिए 7-10 कार्ड हैं और एक इकाई पूरी करने के बाद एक माइलस्टोन आता है। हरेक माइलस्टोन के अंत में एक मूल्यांकन कार्ड होता है। यदि बच्चे इसमें सफल नहीं होते तो उनके लिए उपचारात्मक कदम उठाए जाते हैं।

बच्चों की प्रगति का रिकॉर्ड एक रजिस्टर में रखा जाता है। शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे हर बच्चे का एक पोर्टफोलियो भी बनाएंगे। इसमें दर्ज किया जाएगा कि किस बच्चे ने कौनसा माइलस्टोन कब पूरा किया। अलबत्ता, अब एमजीएमएल स्कूलों में भी सीसीई लागू होने जा रहा है।

प्रशिक्षण

राज्य के लगभग सभी शिक्षकों को एमजीएमएल का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ है। अधिकांश शिक्षकों ने बताया कि उन्हें यह प्रशिक्षण असंतोषजनक लगा था क्योंकि प्रशिक्षक खुद ही इस पद्धति को लेकर आश्वस्त नहीं थे और न ही वे सवालों के ठीक-ठाक जवाब दे पा रहे थे। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षकों ने मशीनी तौर पर जानकारी दे डाली थी।

अध्ययन में पता चला कि मात्र 22 प्रतिशत शिक्षकों को ही इस पद्धति की समुचित जानकारी थी। यही वे शिक्षक थे जिन्होंने इस बात को सराहा कि यह पद्धति बच्चों को स्वतंत्रता देती है और उन्हें आपस में व शिक्षक के साथ मेलजोल के अवसर प्रदान करती है। 20 प्रतिशत शिक्षकों के पास पद्धति की औसत जानकारी थी जबकि 38 प्रतिशत तो तमाम गलतफहमियों के शिकार थे। एक दिलचस्प बात यह पता चली कि शिक्षकों को लगता है कि बच्चे अनियमित रहें तो यह पद्धति कारगर नहीं होगी जबकि एमजीएमएल के दस्तावेजों में एक प्रमुख बात यह कही गई है कि इससे अनियमित रूप से स्कूल आने वाले बच्चों को शामिल करने में मदद मिलेगी।

सीखने-सिखाने की सामग्री

यह तो सही है कि एमजीएमएल की सामग्री आम पाठ्यपुस्तकों से कई मायनों में बेहतर है। खास तौर से एमजीएमएल सामग्री सीखने के विभिन्न रास्ते और अवसर प्रदान करती है। मगर समीक्षा में नजर आया कि इनमें सुधार की काफी गुंजाइश है। सामग्री कमोबेश राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 से पूर्व के नजरिए पर आधारित है। इनमें गुत्थियां सुलझाने और सोचने की बजाय सूत्रविधियों (एल्गोरिद्म), पुनरावृत्ति, जानकारी व जानकारी को याद रखने पर ही जोर दिया गया है।

भाषा

भारतीय स्कूलों में सीखने-सिखाने का एकमात्र संसाधन पाठ्यपुस्तक हैं। इस स्थिति में कोई भी अतिरिक्त संसाधन स्वागत योग्य है। मगर सामग्री का चयन बहुत सतर्कता से करना होगा। एमजीएमएल की हिंदी सामग्री में ढेरों काड्र्स हैं जिनमें भाषा सीखने के कई आयामों को शामिल किया गया है। इनमें कहानियां, कविताएं, विवरणात्मक पाठ्यवस्तु, गतिविधियां, शब्द पट्टियां, वाक्य पट्टियां वगैरह हैं। कई ऐसी कहानियां और कविताएं उपलब्ध हैं जो आमतौर पर पढ़ने को नहीं मिलतीं। शिक्षक इनका उपयोग कई तरह से कर सकते हैं।

अलबत्ता, सामग्री के थोड़े गहन विश्लेषण से कुछ चिंताजनक प्रवृत्तियां उजागर होती हैं। पाठ्यवस्तुओं के साथ जो अभ्यास दिए गए हैं वे बच्चों की कल्पनाशीलता और अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने की बजाय याददाश्त की ही परख करते हैं। एमजीएमएल सामग्री में भाषा का जो स्वरूप सामने आता है वह यह है कि भाषा अक्षरों का एक समूह मात्र है। कहने का मतलब है कि भाषा को अर्थ की दृष्टि से नहीं बल्कि संरचना की दृष्टि से ही प्रस्तुत किया गया है। पढ़ने को एकरैखीय क्रिया माना गया है जिसमें सबसे छोटी इकाई (अक्षर) से शुरू करके अक्षरों को जोड़कर शब्द और शब्दों को जोड़-जोड़कर वाक्य बनाने पर जोर दिया गया है। इस चक्कर में जो कहानियां वगैरह बनाई गई हैं वे कथा के आनंद या अर्थ को ध्यान में रखकर नहीं बल्कि इस दृष्टि से तैयार की गई हैं कि उनमें कतिपय शब्दों का बलात् उपयोग किया जाए।

दरअसल काड्र्स की रचना ही पढ़ने व लिखने को लेकर खंडित सोच को प्रतिबिंबित करती है। काड्र्स को शब्द पट्टी, वाक्य पट्टी आदि का नाम दिया गया है। इससे पता चलता है कि एमजीएमएल के तहत पढ़ना सीखने को अर्थ निर्माण की प्रक्रिया नहीं बल्कि अक्षरों की जोड़-तोड़ का पर्याय माना गया है। इस सोच में अक्षर मूल इकाई होती है और अक्षरों की लड़ियों से शब्द और शब्दों की लड़ियों से वाक्य बन जाते हैं। अभ्यासों में भी यही करने को कहा जाता है। वाक्य पट्टियों को अलग-अलग शब्दों में काटकर, उन शब्दों को हर तरह से आगे-पीछे जोड़-जोड़कर मनमाने वाक्य बनाए जाते हैं। यह राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (2005) की इस मान्यता के एकदम विपरीत है कि पढ़ना मूलतः अर्थबोध की क्रिया है। पढ़ने में एक महत्त्वपूर्ण कौशल संदर्भ के आधार पर अर्थ ताड़ने का होता है। मगर एमजीएमएल सामग्री में बच्चों को अर्थ ताड़ने के कोई अवसर नहीं दिए गए हैं। और तो और, कठिन शब्दों के नाम पर शब्दों के अर्थ दे देने से संदर्भ से अटकल लगाने की बात को पूरी तरह विराम दे दिया गया है।

काड्र्स का प्राथमिक मकसद यह लगता है कि बच्चों को लेखन की विभिन्न विधाओं (जैसे पैराग्राफ, पत्र, निबंध या

जानकारी आधारित इबारतों) और उनके लक्षणों से परिचित कर दिया जाए। कार्ड की रचना साहित्य को केंद्र में रखकर नहीं की गई है जबकि यह जानी-मानी बात है कि सचमुच के साहित्य से परिचय बच्चों को पढ़ना सिखाने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है और इससे बच्चों को यह भी समझ में आता है कि एक अच्छा लेखन क्या होता है। यही हाल कविताओं का भी है। चूंकि कविताएं मूलतः बच्चों को नैतिकता पढ़ाने के लिए चुनी गई हैं, इसलिए उनमें इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया गया है कि बच्चे उनका रस ले सकें और लय व ताल की समझ बना सकें। कविताएं मूलतः बिंबों का निर्माण करती हैं मगर एमजीएमएल काड्र्स में कविताओं के साथ जो अभ्यास दिए गए हैं वे बिंबों की ओर ध्यान आकृष्ट करवाने की बजाय तथ्यों को दोहराने का ही काम करते हैं।

सामग्री बच्चों को लिखने के ज्यादा अवसर प्रदान नहीं करती। याददाश्त आधारित सवाल तो बच्चों को नकल करने को प्रेरित करते हैं। बच्चे जानते हैं कि उन सवालों के जवाब किताबों में मौजूद हैं, जिन्हें उतार लेना है। इक्का-दुक्का अपवादों को छोड़ दें तो सारे अभ्यास इसी तरह के हैं। और तो और, यद्यपि बच्चे समूहों में बैठकर काम करते हैं मगर वे जो भी लिखते हैं वह सिर्फ शिक्षक को दिखाने के लिए होता है। समीक्षा रिपोर्ट के मुताबिक सामग्री में बच्चों के जीवन या अनुभवों के लिए कोई जगह नहीं है। लगता तो ऐसा है कि इस पद्धति का उपयोग कई कक्षाओं को एक साथ पढ़ाने के लिए नहीं बल्कि उन्हें 'संभालने' के मकसद से किया जा रहा है। एमजीएमएल सामग्री से अपेक्षा थी कि वह पाठ्यपुस्तक की सीमाओं को शिथिल कर पाएगी मगर ऐसा कुछ हो नहीं पाया है।

गणित

गणित के काड्र्स में मान्यता यह है कि गणित को छोटे-छोटे टुकड़ों में बांटा जा सकता है। बच्चे जब काड्र्स के एक सेट में लक्षित दक्षता हासिल कर लेंगे तो वे अगली दक्षता की ओर बढ़ सकते हैं और इसमें वे अपनी रफ्तार से आगे बढ़ेंगे। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचे में गणित के पाठ्यक्रम के कुछ प्रमुख गुणधर्म बताए गए हैं। इनमें दृष्टांकन (विजुएलाइजेशन) और प्रस्तुतीकरण, अंतर्संबंध स्थापित करना, अमूर्तीकरण, मात्रात्मक रूप देना, रूपकों का उपयोग, प्रकरणों का विश्लेषण, किसी प्रकरण को छोटी-छोटी सरलतर स्थितियों में बांटना, सवाल छुड़ाना, अटकल लगाना और सत्यापन करना, राशियों का अनुमान लगाना और उत्तरों का सन्निकटन करना, सिलसिलेवार तर्क, गणितीय संप्रेषण वगैरह शामिल हैं। इसके अलावा एनसीएफ 2005 के बाद की परिस्थिति में यह भी उम्मीद की जाती है कि पाठ्यक्रम सूत्रविधियों (एल्गोरिद्म) और हिसाब-किताब (कंप्यूटेशन) से आगे बढ़कर बच्चों को उच्चतर गणितीय कौशल से रूबरू करवाए।

एमजीएमएल में गणित के काड्र्स 21 संकेतों में बंटे हैं। कक्षा 1-4 के दरम्यान इनमें चार गणितीय क्रियाएं, गिनती, संख्याओं को क्रमबद्ध करने, स्थानीय मान, भिन्न, मापन, नाप-तौल, और अनुमान को शामिल किया गया है। वैसे तो विभिन्न संकेतों (लोगो) में बंटे कार्ड ऐसा आभास देते हैं कि इनमें गणित का खोजबीन व समझ का नजरिया अपनाया गया है। मगर हकीकत में ऐसा कुछ नहीं है। अधिकांश काड्र्स चार संक्रियाओं और हिसाब-किताब में ही रमे हुए हैं। यह बात कक्षा 4 के काड्र्स में एकदम स्पष्ट हो जाती है। इनमें जो इबारती सवाल दिए गए हैं उनमें भी बच्चों को यह सोचने का मौका नहीं दिया गया है कि उन्हें कैसे हल करेंगे। काड्र्स में न सिर्फ उपयुक्त संक्रिया का चिन्ह बना दिया गया है बल्कि वे संख्याएं भी बता दी गई हैं जिनके साथ वह संक्रिया की जानी है। इस तरह से गणित के पाठ्यक्रम को मात्र जोड़-बाकी-गुणा-भाग में तब्दील कर दिया गया है।

छात्रों से यह उम्मीद बिलकुल भी नहीं की गई है कि वे किसी इबारती सवाल को पहले अमूर्त रूप में निरूपित करें और फिर सोचकर उसका हल करने का तरीका खोजें और उसके बाद गणना करके हल करें। गणित के काड्र्स में दो समस्याएं और भी नजर आती हैं। पहली समस्या है गति की। काड्र्स को देखने पर पता चलता है कि उनमें गति को एकरूप ढंग से विभाजित नहीं किया गया है। कुछ माइलस्टोन अवधारणात्मक दृष्टि से बहुत भारी हैं तो कुछ माइलस्टोन महज पुनरावृत्ति की मांग करते हैं।

दूसरी समस्या का संबंध क्रम निर्धारण से है। गणित एक ऐसा विषय है जिसमें अवधारणाएं क्रमबद्ध ढंग से आती हैं। क्रम का संबंध बच्चों की वैकासिक स्थिति से भी होता है। इन दोनों कसौटियों पर एमजीएमएल काड्र्स खरे नहीं उतरते। कई बार अवधारणा की दृष्टि से ज्यादा मुश्किल माइलस्टोन्स पहले आ गए हैं जबकि बाद में उससे कहीं अधिक आसान अवधारणा को लिया गया है। जब ऐसी अवधारणा सिखाने की कोशिश होती है, जिसके लिए बच्चे तैयार नहीं हैं तो सूत्रविधि (एल्गोरिद्म) का सहारा लेने के अलावा कोई चारा नहीं रह जाता और यही किया भी गया है। इसका अर्थ यह होता कि बच्चे गणित को समझकर नहीं बल्कि चंद यांत्रिक क्रियाओं और सूत्रों के रूप में सीखेंगे।

गणित में सटीकता का महत्त्व जरूर है मगर साथ ही हल पाने की प्रक्रिया पर भी ध्यान देना जरूरी होता है। खास तौर से इसमें गलतियां करने की गुंजाइश रखना गणितीय तर्क की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। एमजीएमएल काड्र्स में पूरा ध्यान सही उत्तर पर दिया गया है। इनमें यह संकेत बिलकुल नहीं मिलता कि गलतियां करना, हल की ओर बढ़ने की एक जायज रणनीति है। हर जगह छात्रों को बता दिया गया है कि किसी सवाल को कैसे हल करना है, यहां तक कि हाथ पकड़कर उत्तर तक पहुंचा दिया गया है। ऐसे में गणितीय सोच का विकास दरकिनार हो जाता है और पूरा ध्यान सही उत्तर पर केंद्रित हो जाता है।

आम तौर पर वही पारंपरिक तरीका अपनाया गया है कि एक सवाल बतौर उदाहरण हल करके दिखा दिया जाए और फिर उसी तरह के कुछ सवाल दे दिए जाएं। इस तरह के मशीनी शिक्षण का एक उदाहरण उस माइलस्टोन में मिलता है जिसमें 'अ' चिन्ह सिखाया गया है। बच्चों को यह पता ही नहीं चलता कि इस चिन्ह का अर्थ क्या होता है। उनके लिए तो 'अ' मात्र एक चित्र की तरह उभरता है क्योंकि वे इस चिन्ह को किसी गणितीय समझ के साथ नहीं बल्कि एक चित्र की तरह बनाते चलते हैं। वैसे इतना तो निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि एमजीएमएल में शिक्षक पर यह दबाव तो बनाया गया है कि वे गणित को मात्र ब्लैकबोर्ड पर लिखने और बच्चों से उसकी नकल उतरवाने की बजाय सृजनात्मक ढंग से करें। मगर समीक्षा रिपोर्ट में आशंका व्यक्त की गई है कि वास्तव में जिस ढंग से काड्र्स तैयार किए गए हैं, उनमें इस संभावना को नकारा नहीं जा सकता कि काड्र्स खुद नए किस्म के ब्लैकबोर्ड बन जाएंगे।

पर्यावरण अध्ययन

चार वर्षों के पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम में कुल 63 माइलस्टोन हैं। अवधारणाओं में एक सोपानक्रम है। पर्यावरण अध्ययन से संबंधित काड्र्स को समूहों में व्यवस्थित किया गया है। हरेक अवधारणा को कई विधियों से बारंबार दोहराया गया है।

हाल के वर्षों में पर्यावरण अध्ययन को लेकर समझ बदलती रही है। इसे बच्चों को कुछ बुनियादी शब्दावली से परिचित कराने का चरण माना जा सकता है, यह मानकर कि यह शब्दावली उन्हें आगे चलकर तब काम आएगी जब वे विज्ञान और सामाजिक अध्ययन जैसे विषय सीखेंगे। पहले पर्यावरण अध्ययन के तहत विज्ञान व सामाजिक अध्ययन के पूरे विस्तार को बीज रूप में शामिल कर लिया जाता था। एमजीएमएल काड्र्स में इसी नजरिए की झलक मिलती है। साथ ही कुछ नई जमीन भी तोड़ी गई है। वैसे लगता है कि यह नई जमीन सिद्धांत में ही तोड़ी गई है। मसलन, एमजीएमएल के दस्तावेज में कहा गया है, ''पर्यावरण विषय का लैडर बच्चों की व्यापक सोच की क्षमता बढ़ाता है।'' यह भी कहा गया है कि ''एमजीएमएल प्रणाली में पर्यावरण के अध्ययन में प्रत्यक्ष अवलोकन, संकलन, वर्गीकरण का कार्य करते हैं जिससे बच्चों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता पैदा होती है।''

विद्यार्थियों के समूह बनाना, विविध क्षमताओं वाली गतिविधियां करवाना वगैरह सकारात्मक कदम हैं। पर्यावरण अध्ययन के अंतर्गत पाठ्यवस्तु, कविता, कहानी, नाटक, वर्गीकरण, सर्वेक्षण, जानकारी संग्रह करना, चित्र बनाना व चित्रों में रंग भरना, प्रयोग करना आदि विधियों का इस्तेमाल किया जाता है। मगर जब ये गतिविधियां बनावटी किस्म की हों तो कोई लाभ नहीं होता। जैसे, खेती-बाड़ी से संबंधित एक गतिविधि है जिसमें एक काल्पनिक कक्षा में बच्चे रेडियो सुनकर सवाल पूछ रहे हैं और गुरुजी जवाब दे रहे हैं। बच्चों के सवाल एकदम बनावटी हैं और गुरुजी समस्त

जानकारी का स्रोत हैं। कई काड्र्स पर पाठ्यवस्तु को संवाद का रूप दिया गया है मगर ये इतने बनावटी हैं कि संवाद के नाम पर जानकारी ही परोसी गई है। इसी प्रकार से कविताओं का चयन पशुओं, फलों, त्यौहारों वगैरह का परिचय देने के मकसद से किया गया है। इस वजह से कई मर्तबा इनमें लय-ताल की गुणवत्ता पर ध्यान नहीं दिया गया है। इसी प्रकार से वर्गीकरण के तहत भी ऐसे वर्गीकरण किए जाते हैं जिनका इस उम्र के बच्चों के लिए कोई महत्त्व नहीं है। जैसे रबी और खरीफ की फसलें, धातु और लकड़ी। एक उदाहरण द्रव, गैस और ठोस के वर्गीकरण का है जिसमें दी गई वस्तुओं की सूची में ऑक्सीजन जैसी चीजों को शामिल किया गया है। यह कक्षा 1 व 2 के लिए है।

वैसे तो सर्वेक्षण करना और जानकारी का संकलन करना उपयोगी गतिविधियां हो सकती हैं क्योंकि इस तरह से कक्षा से बाहर की जानकारी कक्षा में आने का रास्ता खुलता है मगर हर विषय, अवधारणा का सर्वेक्षण नहीं किया जा सकता। एमजीएमएल में आग्रह यह है कि हर अवधारणा पर ये सारी विधियां लागू की जाएं। चित्र बनाना और उनमें रंग भरना इस आयु वर्ग के लिए बढ़िया गतिविधि हो सकती थी मगर इसमें व्यावहारिक दिक्कत है। इसे वास्तव में करने के लिए हरेक बच्चे के पास अपना कार्ड होना चाहिए। शायद इसीलिए टीआईएसएस के दल को एक भी स्कूल में यह गतिविधि देखने को नहीं मिली। एक दिक्कत यह भी है कि रंग भरने के लिए प्रायः काफी पेचीदा चित्रों का चुनाव किया गया है जो कक्षा 1 व 2 के बच्चों के लिए मुश्किल है- अभी तो वे पेंसिल पकड़ना ही सीख रहे हैं।

प्रयोगों की हालत तो और पतली है। एक तो वैसे ही कक्षा 1 व 2 के बच्चों के लिए प्रयोग डिजाइन करना बहुत मुश्किल काम है, ऊपर से यदि प्रयोग की समझ स्पष्ट नहीं है तो यह काम मुश्किल के साथ-साथ निरर्थक भी हो जाता है। कोई प्रयोग करने भर से अवधारणाएं स्पष्ट नहीं होतीं। एमजीएमएल काड्र्स में तो यह भी स्पष्ट नहीं है कि प्रयोग किसे कहा जाए। जैसे एक कार्ड में बच्चों से उम्मीद की गई है कि वे विभिन्न किस्म की दुर्घटनाओं के बारे में जानकारी इकट्ठी करेंगे। पता नहीं इसे प्रयोग को क्यों कहा गया है और यह भी स्पष्ट नहीं है कि इससे क्या सीखेंगे।

यह तो अच्छी बात है कि पर्यावरण अध्ययन के लिए इतनी विविध शैक्षिक विधियों का विकास किया गया है। मगर हर माइलस्टोन और हर अवधारणा के लिए हर तरह के औजार का उपयोग करना थोड़ी ज्यादती हो गई है। इसकी वजह से कई अवधारणाओं के सीखने में काफी अधिक दोहराव हुआ है और वे लंबी खिंच गई हैं।

व्यवस्थाएं

एमजीएमएल के तहत कक्षा-कक्ष को विशेष तरह से डिजाइन व सुसज्जित किया गया है। इसके तहत रैक्स, लैडर, समूह चार्ट, बच्चों के लिए ब्लैकबोर्ड वगैरह शामिल हैं। यह अच्छी बात है कि ये व्यवस्थाएं अधिकांश स्कूलों (81 प्रतिशत) में उपलब्ध हैं। चूंकि उम्मीद यह की जाती है कि सीखने के लिए काड्र्स बच्चे खुद ही चुनकर उठाएंगे इसलिए जरूरी है कि ये उनकी पहुंच में हों। अध्ययन दल के आंकड़े दर्शाते हैं कि 75 प्रतिशत स्कूलों में रैक्स बच्चों के लिए सुगम थे। एमजीएमएल के तहत सीखने के लिए मुख्य सामग्री काड्र्स हैं। आंकड़े दर्शाते हैं कि 48 प्रतिशत स्कूलों में काड्र्स उपलब्ध थे जबकि 43 प्रतिशत स्कूलों में नाकाफी थे। 68 प्रतिशत स्कूलों में काड्र्स बच्चों की पहुंच में थे जबकि 18 प्रतिशत स्कूलों में पहुंच कठिन थी।

कार्ड के साथ रीडर्स एक और महत्त्वपूर्ण संसाधन है। एमजीएमएल के अंतर्गत यह अत्यंत स्वागत योग्य संसाधन है। ये रीडर्स 6-8 पन्नों की पुस्तिकाएं हैं और इनकी कुल संख्या 50 के आसपास है। जिन काड्र्स पर पढ़ाकू बंदर का संकेत है, उनके साथ बच्चे इन रीडर्स की कहानी पढ़ते हैं। अध्ययन के दौरान पता चला कि मात्र 21 प्रतिशत स्कूल ऐसे हैं जहां लगभग सारे रीडर्स उपलब्ध हैं। शेष स्कूलों में या तो एक भी रीडर नहीं है या कुछेक रीडर्स ही उपलब्ध हैं। अलबत्ता, जिन स्कूलों में रीडर्स मौजूद हैं, वहां इनकी अच्छी देखभाल हो रही है।

कक्षा 1 व 2 में कुल मिलाकर 8 लैडर्स हैं। लैडर्स वे चार्ट हैं जो बच्चों के लिए सीखने के क्रम का निर्धारण करते हैं। इन्हें कक्षा में लगाया जाता है। करीब आधे स्कूलों में सारे लैडर्स मौजूद थे। समूह चार्ट, जो कक्षा में समूहों के

बैठने की जगह दर्शाते हैं, आधे से थोड़े ज्यादा स्कूलों में मौजूद थे। मगर ऐसा लगता है कि शिक्षकों को समूह बनाने की प्रक्रिया ठीक से समझ नहीं आई है। यदि कुल मिलाकर आधारभूत सुविधा की स्थिति देखें तो रैक्स, काड्र्स और समूह व्यवस्था मात्र 31 प्रतिशत स्कूलों में ही मुकम्मल पाई गई। इनमें से भी अधिकांश ग्रामीण छोटे स्कूल थे। गणित शिक्षण के लिए कुछ खास किस्म की सीखने-सिखाने की सामग्री की जरूरत होती है। आंकड़े बताते हैं कि अधिकांश स्कूलों में ऐसी सामग्री उपलब्ध नहीं थी। मगर एक अच्छी बात यह देखने में आई कि कई शिक्षकों ने अपनी पहल पर ऐसी सामग्री या इनके विकल्प का जुगाड़ किया था।

रिकॉर्ड्स

एमजीएमएल के तहत शिक्षकों से उम्मीद की जाती है कि वे बच्चों के रिकॉर्ड्स रखेंगे। इसके अंतर्गत बच्चों की डायरी, स्क्रेप बुक और पोर्टफोलियो रखे जाते हैं। मगर डायरी मात्र 47 प्रतिशत स्कूलों में और पोर्टफोलियो मात्र 31 प्रतिशत स्कूलों में देखे गए जबकि स्क्रेप बुक्स तो मात्र 11 प्रतिशत स्कूलों में बचाकर रखी गई थीं। एमजीएमएल में एक अच्छी परंपरा यह है कि बच्चों के द्वारा बनाए गए चित्र वगैरह कक्षा में प्रदर्शित किए जाएंगे। सर्वेक्षण के दौरान ऐसे प्रदर्शन 45 प्रतिशत स्कूलों में नजर आए। पुस्तकालयों का भी प्रावधान रखा गया है। इनमें करीब 200-200 पुस्तकें हैं जो प्रायः सरकार द्वारा दी गई हैं जिसमें विभिन्न पत्रिकाएं और यहां तक कि ऐसी पुस्तकें भी शामिल हैं जो वयस्क लोगों के लिए ही उपयुक्त लगती हैं। पुस्तकालयों का उपयोग भली-भांति नहीं हो रहा है और कई स्कूलों में पता चला कि किताबें ताले में बंद हैं और बच्चों को नहीं मिलती हैं। आंकड़ों के मुताबिक मात्र 38 प्रतिशत स्कूलों में ही पुस्तकालय ठीक-ठाक हालत में थे।

क्या एमजीएमएल पर अमल हो रहा है?

टीआईएसएस की टीम ने स्कूल की वास्तविक परिस्थिति में यह जानने की कोशिश की कि क्या स्कूलों में एमजीएमएल पद्धति को अपनाया गया है और किस हद तक। इसके लिए एक तो उन्होंने स्कूलों में व्यवस्थाओं और सामग्री की उपलब्धता को आधार बनाया। इसके अलावा, शिक्षकों को एक प्रश्नावली देकर उनके जवाबों का विश्लेषण किया गया और शिक्षकों से बातचीत भी की गई। बच्चों से भी कुछ लिखित व मौखिक प्रमाण प्राप्त किए गए।

बच्चों व शिक्षकों की प्रतिक्रियाएं

जब बच्चों से यह पूछा गया कि क्या वे काड्र्स का उपयोग करते हैं तो कक्षा 3 के 67 प्रतिशत और कक्षा 2 के 61 प्रतिशत बच्चों ने बताया कि उन्होंने पिछले वर्ष (यानी कक्षा 2 या 1 में) काड्र्स का उपयोग किया था। आधे से ज्यादा बच्चे इस पद्धति से परिचित थे। मगर शिक्षकों के साक्षात्कार व कक्षा के अवलोकनों से पता चला कि लगभग आधे स्कूलों में एमजीएमएल पर अमल नहीं हो रहा है। 21 प्रतिशत स्कूलों में एमजीएमएल को समझ के साथ लागू किया जा रहा था और 17 प्रतिशत में मिश्रित पद्धति (एमजीएमएल व पाठ्यपुस्तक मिलाकर) का उपयोग हो रहा था। कम से कम 48 प्रतिशत स्कूलों में एमजीएमएल का क्रियान्वयन नहीं हो रहा था, 19 प्रतिशत में शिक्षण तो पारंपरिक विधि से चल रहा था मगर शिक्षक कुछ प्रयास कर रहे थे जबकि 10 प्रतिशत में शिक्षक कुछ हद तक ही लगन से काम कर रहे थे और 10 प्रतिशत कक्षाओं में तो शिक्षक एकदम लापरवाह नजर आए। मिश्रित पद्धति से आशय है कि शिक्षक कार्ड पढ़वा रहे थे, समूहों का निर्माण ठीक से नहीं किया गया था, कार्ड और पाठ्यपुस्तक का मिला-जुला इस्तेमाल हो रहा था, कार्ड का उपयोग एक शिक्षण साधन के रूप में या मात्र दिखाने और बताने के लिए किया जा रहा था। ऐसा करने के कई कारण गिनाए गए - सामग्री का अभाव, खराब हो चुके काड्र्स की क्षतिपूर्ति न हो पाना, रिकॉर्ड रखने में असमर्थता, विभाग द्वारा परवाह न किया जाना, अप्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति, समर्थन का अभाव वगैरह।

शिक्षक प्रशिक्षण इस कार्यक्रम का एक अहम पहलू रहा है। किसी भी स्कूल में ऐसी स्थिति तो नहीं थी कि एक भी प्रशिक्षित शिक्षक न हो मगर ऐसी स्थिति जरूर देखी गई कि प्रशिक्षित शिक्षक कक्षा 1 व 2 को नहीं पढ़ा रहे थे। करीब 50 प्रतिशत शिक्षक प्रशिक्षण से संतुष्ट नहीं थे। उनका कहना था कि वहां उन्होंने कुछ नहीं सीखा था और इसी वजह से वे एमजीएमएल पद्धति का पालन नहीं कर रहे हैं। कुछ शिक्षकों का विचार था कि प्रशिक्षण व्यावहारिक नहीं था और पद्धति का प्रदर्शन नहीं किया गया था। कई शिक्षकों का मत था कि प्रशिक्षक खुद भी स्पष्ट नहीं थे कि करना क्या है। बताया गया कि कई प्रशिक्षक एमजीएमएल लागू करने का तर्क स्पष्ट नहीं कर पाए थे और यही कहते रहे कि ऊपर से आदेश है, इसलिए इसे लागू करना है। अन्य 50 फीसदी शिक्षक प्रशिक्षण से संतुष्ट थे और उन्होंने वहां काफी कुछ सीखा था।

सर्वेक्षण में यह भी जानने की कोशिश की गई थी कि इस शिक्षण पद्धति को लेकर शिक्षकों की अपनी समझ क्या है। शिक्षकों के जवाबों के आधार पर उन्हें तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है - अच्छे, औसत और घटिया। समीक्षा दल का मत है कि 40 प्रतिशत शिक्षक ऐसे हैं जो बच्चों के सीखने के बारे में या उसमें शिक्षक की भूमिका के बारे में विचार ही नहीं करते हैं। 11 प्रतिशत शिक्षक इस मामले में सकारात्मक विचार रखते हैं। यह भी पता चला कि लगभग 40 प्रतिशत शिक्षकों को एमजीएमएल पद्धति की समझ नहीं है जबकि 22 प्रतिशत शिक्षकों में अच्छी समझ देखी गई।

मसलन, कई शिक्षकों का ख्याल था कि बच्चों के समूह इस आधार पर बनाए जाने चाहिए कि वे क्या जानते हैं और उनका बुद्धिमत्ता का स्तर क्या है। उन्हें लगता है कि बुद्धिमान बच्चों के समूह तो अपने आप सीख लेंगे जबकि कमजोर बच्चों के समूहों को शिक्षक की मदद की जरूरत होगी। उन्हें यह भी लगता है कि काड्र्स शिक्षण साधन हैं जिनकी मदद से पाठ्यपुस्तक को ज्यादा स्पष्ट किया जा सकता है। इसी प्रकार से एक विचार यह भी था कि एमजीएमएल पद्धति का मतलब है कि बच्चे गाते-बजाते सीखेंगे। करीब 30 प्रतिशत शिक्षकों में एमजीएमएल पद्धति की ऐसी ही कमजोर समझ पाई गई। बेहतर समझ वाले शिक्षकों में भी इस बात को लेकर बहुत अच्छी समझ नहीं थी कि छात्रों के समूह किस आधार पर बनाए जाएं। अलबत्ता, वे यह जानते थे कि इस पद्धति में छात्रों को स्वायत्तता मिलती है।

शिक्षकों में पद्धति की समझ और एमजीएमएल के क्रियान्वयन के बीच कुछ संबंध भी देखा गया है। यह देखा गया है कि बेहतर समझ वाले शिक्षक इस पद्धति को समझदारी के साथ लागू करते हैं। मगर यह संबंध एक-एक की संगति में नजर नहीं आता। कई शिक्षकों की पद्धति की समझ अच्छी थी मगर वे मशीनी ढंग से पद्धति को लागू कर रहे थे। इसके विपरीत यह भी देखा गया कि जहां शिक्षकों की समझ कमजोर थी, उन स्कूलों में प्रायः क्रियान्वयन की स्थिति भी खस्ता थी। निष्कर्ष यही है कि यदि पद्धति की समझ बेहतर हो, तो समझदारी से उसके क्रियान्वयन की संभावना भी अधिक होती है।

कक्षाओं में कार्य

अध्ययन के दौरान कक्षाओं का अवलोकन भी किया गया था। इसमें यह देखने की कोशिश की गई कि कक्षाओं में इस पद्धति को किस ढंग से चलाया जा रहा है। मसलन यह देखने की कोशिश हुई कि एक ही कक्षा में बच्चे कितने अलग-अलग माइलस्टोन में बंटे हुए हैं। एमजीएमएल के पीछे एक तर्क यह रहा है कि बच्चे काफी अलग-अलग रफ्तार से सीखते हैं और एक ही कक्षा में बच्चे सीखने के स्तर की दृष्टि से काफी अलग-अलग स्तरों पर हो सकते हैं। जिन स्कूलों में एमजीएमएल ठीक तरह से चल रहा था, उनमें से आधे स्कूलों में बच्चों के माइलस्टोन स्तर में बहुत फर्क नहीं दिखा। वैसे रिकॉर्ड्स की हालत इतनी अच्छी नहीं थी कि इस बारे में ज्यादा यकीन से कुछ कहा जा सके।

कक्षाओं के अवलोकन से पता चलता है कि आधे से ज्यादा स्कूलों में बच्चे गतिविधियों में लगन से शामिल होते हैं। शेष स्कूलों में बच्चे कक्षा कार्य में संलग्न नहीं थे। ऐसे स्कूल में बच्चे कुछ नहीं कर रहे थे या गपशप कर रहे थे, खेल

रहे थे या आपस में झगड़ रहे थे। कई कक्षाओं में सीखने के नाम पर कुछ नहीं चल रहा था। एमजीएमएल लागू करने वाले कुछ स्कूलों में देखा गया कि बच्चे काफी हद तक शिक्षक पर निर्भर थे कि अगला कार्ड कौनसा उठाना है। यदि शिक्षक ध्यान न दे तो बच्चे हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं। यह भी देखा गया कि कुछ ही बच्चे सक्रिय होते हैं।

यह भी देखा गया कि लगभग आधे स्कूलों में कक्षा में शिक्षक नहीं होते। ऐसी स्थिति में बच्चे बैठकर गिनती या वर्णमाला लिखते रहते हैं। कई स्कूलों में एमजीएमएल के साथ पारंपरिक शिक्षण भी चल रहा था जिसमें शिक्षक पाठ को पढ़ देते हैं या एक सवाल छुड़ाकर दिखा देते हैं। ऐसी कक्षाओं में तो अधिकांश बच्चे जुड़ते ही नहीं हैं। अलबत्ता एमजीएमएल का पालन करने वाले चंद स्कूलों में देखा गया कि शिक्षक कक्षा में घूम-घूमकर बच्चों को समझाते हैं कि गतिविधि कैसे करना है, मगर बच्चों को अपना काम करने की छूट देते हैं।

पाठ्यपुस्तकों और एमजीएमएल सामग्री की तुलना में मिले-जुले विचार सुनने को मिले। जैसे एक शिक्षक ने बताया कि एमजीएमएल पद्धति बेहतर है क्योंकि इससे बच्चों में रुचि पैदा होती है। एक अन्य शिक्षक का मत था कि एमजीएमएल इसलिए बेहतर है क्योंकि इसमें अवधारणाओं को छोटी-छोटी इकाइयों में बांटा गया है। पाठ्यपुस्तकों में तो सब एक साथ आ जाता है। साथ ही, उन्हें यह भी लगता है कि पाठ्यपुस्तक फिर भी बेहतर हैं क्योंकि बच्चे इन्हें घर ले जाते हैं और घर पर भी पढ़ सकते हैं। कुछ शिक्षकों ने तो यह भी कहा कि पाठ्यपुस्तकें अनियमित बच्चों के लिहाज से बेहतर हैं क्योंकि वे इन्हें घर पर भी पढ़ सकते हैं। यह बात गौरतलब है क्योंकि एमजीएमएल के बारे में एक तर्क यह था कि यह विधि अनियमित बच्चों के मामले में खास तौर से बेहतर है। एक शिक्षक को एमजीएमएल घुमाऊ पद्धति लगती है क्योंकि उनके अनुसार वर्णमाला एक विचित्र क्रम में पढ़ाई जाती है। उनके मुताबिक कैसे भी सिखाएं, वर्णमाला तो सिखाना ही पड़ेगी। कई शिक्षकों का ख्याल है कि एमजीएमएल में हिंदी ठीक से नहीं पढ़ाई जाती और हिंदी ही नहीं आएगी तो वे अन्य विषय कैसे सीखेंगे।

मजेदार बात यह है कि कई शिक्षक मानते हैं कि विभाग की एमजीएमएल को चलाने में कोई रुचि नहीं है। ऐसी अफवाहें सुनने को मिलती रहती हैं कि कार्यक्रम बंद होने वाला है। इस वजह से कई शिक्षक इस कार्यक्रम में ज्यादा मेहनत नहीं करना चाहते। इसके अलावा अधिकांश स्कूलों में सामग्री की कमी की शिकायत के चलते इसे चलाने का जोश नहीं है। और सबसे बड़ी बात शिक्षकों को यह लगती है कि कार्यक्रम की कोई मॉनीटरिंग नहीं होती, न ही कोई शैक्षणिक मदद मिलती है। ऐसा लगता है कि किसी को फिक्र नहीं है कि यह कार्यक्रम चलता है या नहीं। और तो और, सब बच्चों को पाठ्यपुस्तकें भी दी गई हैं जिसकी वजह से भ्रम व्याप्त है।

कई शिक्षकों का विचार था कि पद्धति उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि प्रशिक्षण व शिक्षकों का रवैया ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। इस संदर्भ में एक महत्त्वपूर्ण बात यह पता चली कि एमजीएमएल के तहत शिक्षकों के लिए जो निर्देशिका प्रकाशित हुई है वह भी कई शिक्षकों को नहीं मिली है। इन सब बातों का मिला-जुला प्रभाव है कि कई स्कूलों में यह कार्यक्रम ठप पड़ा है।

शिक्षकों से बातचीत में लगा कि कक्षा में बच्चों की भूमिका यह है कि वे अपना कार्ड उठा लें और उसके अनुसार गतिविधियां करें। जिन स्कूलों में कार्यक्रम ठीक चल रहा है, वहां बच्चे आत्म-विश्वास से भरपूर लगते हैं। अपनी सीखने की प्रक्रिया उनके नियंत्रण में है और वे शिक्षक से बेहिचक संपर्क करते हैं। जैसे एमजीएमएल को प्रभावी ढंग से उपयोग कर रही एक शिक्षक ने कहा कि इसमें बच्चे स्वतंत्र होते हैं, वे बेहिचक आकर मुझे छू सकते हैं, कक्षा में घूमते-फिरते हैं, दोस्तों के साथ काम करते हैं। एक शिक्षक के मुताबिक एमजीएमएल में यह आसानी से दिख जाता है कि बच्चे को कहां दिक्कत आ रही है। शिक्षकों से बातचीत में लगा कि कक्षा में बच्चों की भूमिका यह है कि वे अपना कार्ड उठा लें और उसके अनुसार गतिविधियां करें। जिन स्कूलों में कार्यक्रम ठीक चल रहा है, वहां बच्चे आत्म-विश्वास से भरपूर लगते हैं। अपनी सीखने की प्रक्रिया उनके नियंत्रण में है और वे शिक्षक से बेहिचक संपर्क करते हैं। कुछ स्कूलों में शिक्षक आगे होकर कार्ड बांटते हैं और पढ़ाते हैं जबकि बच्चे मूक ग्राही बने रहते हैं। हमें बच्चों में आपस में सीखना ज्यादा देखने को नहीं मिला।

बच्चों की स्थिति

अंत में रिपोर्ट में बच्चों के सीखने की स्थिति का विश्लेषण किया गया है। इसके लिए कक्षा 2 व 3 के बच्चों से कुछ टेस्ट करवाए गए थे। टेस्ट में बच्चों के उत्तरों का विश्लेषण कई तरह से किया गया। कुल मिलाकर जो कहा जा सकता है वह यहां प्रस्तुत है। गणित में कक्षा 2 में करीब 66 प्रतिशत बच्चे एक अंक की संख्याएं और उनके जोड़ जानते हैं। मगर मात्र एक-तिहाई बच्चे ही दो अंकों की संख्या से परिचित हैं। करीब एक-तिहाई बच्चे एक अंक का घटाना कर सकते हैं जबकि बीस प्रतिशत बच्चे दो अंकों का घटाना कर पाते हैं। कक्षा 3 में मात्र 40 प्रतिशत बच्चे ही दो अंकों की संख्याओं से वाकिफ थे। आधे से कम बच्चे दो अंकों का जोड़कर पाते हैं। बगैर उधार का घटाना 35 प्रतिशत तथा उधार लेकर घटाना मात्र 14 प्रतिशत बच्चे कर पाए। इबारती सवालों में तो बच्चे सिर्फ अंकों को पढ़कर जोड़ देते हैं, लगता है इबारत को पढ़ते ही नहीं।

कक्षा 2 के बच्चों को कक्षा 1 स्तर का पाठ पढ़ने को दिया गया था। 24 प्रतिशत बच्चे धाराप्रवाह पढ़ते हैं या शब्द-दर-शब्द पढ़ते हैं। दोनों ही कक्षाओं के मात्र 12-15 प्रतिशत बच्चे ही शब्दों को मात्रा समेत लिख पाए। करीब 15 प्रतिशत बच्चे सरल या जटिल पूरा वाक्य लिख पाए। अन्य बच्चों ने शब्द या शब्दों को समूह ही लिखे। 64 प्रतिशत बच्चों ने तो लिखने की कोशिश ही नहीं की।

कक्षा 3 के 32 प्रतिशत बच्चों का हस्तलेखन पढ़ने योग्य था और 16 प्रतिशत बच्चों के हिज्जे ठीक-ठाक थे। मगर मात्र 10 प्रतिशत ही पूरे वाक्य लिख पाए। कक्षा 3 के करीब 20 प्रतिशत बच्चे पाठ्यवस्तु-आधारित समझकर लिखने के सवालों के सही जवाब दे पाए। ऐसे सवालों के जवाब तो मात्र 10 प्रतिशत बच्चे ही दे पाए जो सीधे-सीधे पाठ्यवस्तु पर आधारित नहीं थे और जिनमें निष्कर्ष निकालने की या सोचने की जरूरत थी। आश्चर्य की बात तो यह रही कि कक्षा 2 व 3 के 40-60 प्रतिशत तक बच्चों ने भाषा के टेस्ट में जवाब देने की कोशिश तक नहीं की।

किसी कक्षा के लिए न्यूनतम स्वीकार्य या उससे अधिक प्राप्तांक हासिल करने वाले बच्चे भाषा में 20-30 प्रतिशत और गणित में करीब 40 प्रतिशत थे। औसत प्राप्तांक न्यूनतम स्वीकार्य स्तर से कम थे। अधिकांश बच्चों का अधिगम संबंधित कक्षा के लिए न्यूनतम स्वीकार्य स्तर तक नहीं पहुंच पाया था। इस तरह के मूल्यांकन अथवा कार्यक्रम के समग्र प्रभाव के आकलन में एक बड़ी दिक्कत यह रही कि बड़ी संख्या में स्कूलों में कार्यक्रम या तो चल ही नहीं रहा है या यांत्रिक ढंग से चल रहा है। इसके अलावा बच्चों के सीखने को लेकर, सीखने पर उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि के असर को लेकर शिक्षकों की धारणाओं का काफी असर बच्चों की उपलब्धियों पर पड़ता है। इन सब वजहों से यब कहना मुश्किल है कि एमजीएमएल पद्धति का क्या व कितना असर है। ◆